मधुबन ओम् शान्ति अंक 321 अप्रैल 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(15-03-19)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा बिन्दू स्वरूप बाप और बिन्दू रूप मैं आत्मा इस स्मृति से हर परिस्थिति को बिन्दी लगाने वाले, सर्व की दुआओं के पात्र, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - चारों तरफ सभी ने मीठे मीठे शिव भोलानाथ बाबा की हीरे तुल्य जयन्ती खूब धूमधाम से मनाई। बहुत अच्छी बेहद की सेवाओं के समाचार मिलते रहते हैं। इसके बाद होली का त्योहार भी सभी को अनेक प्रेरणायें देता है - एक तो बाबा कहते बच्चे होली अर्थात् जो बातें बीत गई उन्हें बिन्दी लगा दो। दूसरा - हम सब आत्मायें बाबा की हो ली अर्थात् हो गई तो सदा उसी संग के रंग में रंगे रहो और होली (पवित्र) बनकर सबको होली बनाने की सेवा करो।

वर्तमान जो मीठे बाबा की मुरलियां चल रही हैं वह जैसे आईने का काम करती हैं। बाबा जैसी स्थिति चाहता है, वैसी हमें बनानी है। पहले वाचा सेवा ज्यादा थी, अभी तो बाबा की दुआयें सेवा करा रही हैं क्योंकि स्थिति पर ध्यान है। अब समय प्रमाण मन्सा सेवा का बहुत अच्छा अभ्यास चाहिए। ऐसी शक्तिशाली मन्सा हो जो दूर-दूर तक शान्ति और शक्ति के वायब्रेशन फैलते रहें। कभी भी उमंग-उल्हास कम न हो या आपस में भाव स्वभाव के वश न हों। एक दो को मन्सा से रिगार्ड देते रहें। सूक्ष्म साइलेंस में रहने से, सबके प्रति शुभ भावना रखने से मन्सा सेवा अच्छी होती है। आपस में जो मानसिक प्रेम की लहर है, वह भी मन्सा सेवा का साधन है।

पिछले 50 वर्षों के अव्यक्त पार्ट से भी बहुत सकाश मिली है, तो अभी चला रही है। बाबा ने हम सबको ऐसा लायक बनाया है। बाबा को कभी हाज़िर न देखूँ या अपने को बाबा के साथ न देखूँ, कोई घड़ी ऐसी नहीं आयी। सोते, जागते यही स्मृति और समर्थी रहती है। जैसे मुझे सकाश चला रही है, ऐसे हर एक को सकाश मिले, यही भावना है।

आवाज़ से परे परमधाम की स्थिति हो। बाबा के साथ साकार का अनुभव हो। किसी के लिए भी ग्लानि या प्रभाव अगर थोड़ा भी हमारे अन्दर है तो बड़ा नुकसान है। कोई भी चीज़ में लगाव नहीं, न स्थान से लगाव है, न शरीर से। बाबा ने इस शरीर में आत्मा को बिठाया है, कोई और काम तो नहीं करती हूँ, सिर्फ वृत्ति शुद्ध है। वृत्ति से दृष्टि, दृष्टि में सच्चाई और प्रेम। ज्ञान को भले हम शब्दों में रिपीट न भी करें, पर ज्ञान काम करता है। बुद्धि में किसी का अवगुण, किसी की चलन नोट नहीं है, इससे बुद्धि बिल्कुल फ्री है तो वृत्ति शुद्ध है। शुद्ध वृत्ति से सेवायें अपने आप होती हैं। तो बोलो, हमारी मीठी मीठी बहिनें, भाई ऐसी शुद्ध और नि:सकंल्प स्थिति, वृत्ति वा दृष्टि रहती है ना! अब कोई भी बातों में समय, संकल्प, श्वांस जरा भी व्यर्थ न जाये। जैसे हमारा बाबा लवली और प्युअर है, ऐसे हम आत्मा भी प्युअर और लवली बनती जाएं, इसके लिए अब अन्तर्मुखी रह विशेष बाबा की याद से देह अभिमान के अंश को भी खत्म करना है। अन्दर ऐसी कोई भी खामी न हो जो हमारी वैल्यु को कम कर दे। बाकी करनकरावनहार बाबा अपनी स्थापना का कार्य बहुत ही फास्ट गति से करा रहे हैं।

आप सभी भी प्रभू लीला देख सदा हर्षित होते हो ना! कैसे बाबा अव्यक्त वतन में बैठकर अपने बच्चों की अव्यक्ति पालना कर रहे हैं, यह अनुभव तो हर एक करते ही हैं। अच्छा !

सबको याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"अनेक आकर्षणों से मुक्त बन जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो"

1) पहले अपनी देह से, देह के सम्बन्ध से और पुरानी दुनिया की आकर्षण से मुक्त बनो। जब इस मुक्ति की अवस्था का अनुभव करेंगे तब मुक्त होने के बाद जीवनमुक्ति का अनुभव स्वत: होगा। तो चेक करो जीवन में रहते हुए देह, देह के सम्बन्ध और पुरानी दुनिया की आकर्षण से कहाँ तक मुक्त बने हैं?

2) जब तक किसी भी प्रकार का लगाव है, चाहे वह संकल्प के रूप में हो, चाहे सम्बन्ध के रूप में, चाहे सम्पर्क के रूप में, चाहे अपनी कोई विशेषता की तरफ हो। कोई भी लगाव बन्धन-युक्त कर देगा। वह लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा और वह विश्व-कल्याणकारी भी बना नहीं सकेगा इसलिए पहले स्वयं लगाव मुक्त बनो तब विश्व को मुक्ति व जीवनमुक्ति का वर्सा दिला सकेंगे।

3) यदि कोई भी स्वभाव, संस्कार, व्यक्ति अथवा वैभव का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करता है, तो बाप के याद की आकर्षण सदैव नहीं रह सकती। कर्मातीत बनना माना सर्व कर्म बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। यह न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार करते रहो। सहज और स्वत: यह अनुभूति हो कि ''कराने वाला और करने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ हैं ही अलग।''

4) स्वदर्शन चक्रधारी सो छत्रधारी बनो तो देह की स्मृति के अनेक व्यर्थ संकल्पों के चक्र से, लौकिक और अलौकिक सम्बन्धों के चक्र से, अपने अनेक जन्मों के स्वभाव और संस्कारों के चक्र से और प्रकृति के अनेक प्रकार की आकर्षण के चक्र से मुक्त हो जायेंगे और अन्य आत्माओं को भी बाप से प्राप्त हुई शक्तियों द्वारा अनेक चक्करों से सहज ही छुड़ाकर जीवनमुक्त बना सकेंगे।

5) जो परमात्म ज्ञानी बच्चे हैं, उन्हें ज्ञान का फल मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा संगम पर ही प्राप्त होता है। ज्ञान अर्थात् समझ। समझदार हर कर्म करते हुए सदा स्वयं को बन्धनमुक्त, सर्व आकर्षणों से मुक्त बनाने की समझ रखता है। उनके हर संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में मुक्ति-जीवनमक्ति की स्टेज रहती है, जिसको न्यारा और प्यारा कहते हैं।

6) जैसे बाप सदा स्वतंत्र है–ऐसे बाप समान बनो। बापदादा अब बच्चों को परतंत्र देख नहीं सकते। अगर स्वयं को स्वतंत्र नहीं कर सकते हो, स्वयं ही अपनी कमजोरियों में गिरते रहते हो तो विश्व परिवर्तक कैसे बनेंगे! अब इस स्मृति को बढ़ाओ कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, इससे सहज सर्व पिंजड़ों से मुक्त उड़ता पंछी बन जायेंगे।।

7) अपने स्थूल और सूक्ष्म बन्धनों की लिस्ट सामने रखो। लक्ष्य रखो कि मुझे बन्धनमुक्त बनना ही है। ''अब नहीं तो कब नहीं'' - सदा यही पाठ पक्का करो। ''स्वतंत्रता ब्राह्मण जन्म का अधिकार है''- अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कर जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो। जब अपने को गृहस्थी समझते हो तब गृहस्थी का जाल होता। गृहस्थी बनना माना जाल में फँसना। ट्रस्टी अर्थात् मुक्त।

8) अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, शक्ति के बचत की योजना बनाकर बिन्दी रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दी रूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्प्रिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा, आप भी उनसे मुक्त रहेंगे और आपका शक्तिरूप उन्हों को भी मुक्त करेगा।

9) जैसे और स्थूल वस्तुओं को जब चाहो तब लो और जब चाहो तब छोड़ दो। वैसे देह के भान को जब चाहो तब छोड़कर देही-अभिमानी बन जाओ – यह प्रैक्टिस इतनी सरल हो, जितनी कोई स्थूल वस्तु की सहज होती है। रचयिता जब चाहे रचना का आधार ले, जब चाहे तब रचना के आधार को छोड़ दे, जब चाहे तब न्यारे, जब चाहें तब प्यारे बन जायें - इतना बन्धनमुक्त बनो।

10) स्वयं को बन्धनों से मुक्त करने के लिए अपनी चलन को और जो कड़ा संस्कार है उसे चेन्ज करो। बंधन डालने वाले अपना काम करें, आप अपना काम करो। उनके काम को देख घबराओ नहीं। जितना वो अपना काम फोर्स से कर रहे हैं, आप अपना फोर्स से करो। उनके गुण उठाओ कि वह कैसे अपना कर्तव्य कर रहे हैं, आप भी करो। अपने को बन्धनों से मुक्त करने की युक्ति रचो।

11) जब सेवा में वा अपने पुराने संस्कारों को परिवर्तन करने में सफलता नहीं मिलती है तो कोई न कोई विघ्न के वश हो

जाते हो। फिर उनसे मुक्त होने की इच्छा रखते हो, लेकिन बिना शक्ति के यह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकती इसलिए अलंकारी रूप बनो। शक्तिरूप धारण करो।

12) मास्टर त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म, हर संकल्प करो वा वचन बोलो, तो कोई भी कर्म व्यर्थ वा अनर्थ वाला नहीं हो सकता। त्रिकालदर्शी अर्थात् साक्षीपन की स्थिति में स्थित होकर इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करेंगे तो कर्म के वशीभूत नहीं होंगे। सदा कर्म और कर्म के बन्धन से मुक्त बन अपनी ऊंची स्टेज को प्राप्त कर लेंगे।

13) ज्ञान-स्वरुप मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिमान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो युक्तियुक्त नहीं है, वह कर लेते हो तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमगुणा ज्यादा है। इस कारण बन्धनयुक्त आत्मा स्वतन्त्र न होने कारण जो चाहे वह नहीं कर पाती। इसलिए युक्तियुक्त कर्म द्वारा मुक्ति को प्राप्त करो।

14) अपने संकल्पों के तूफान वा कोई भी सम्बन्ध द्वारा, प्रकृति वा समस्याओं द्वारा तूफान व विघ्न आते हैं तो उनसे मुक्ति पाने के लिए योग युक्त, युक्ति-युक्त बनो। जब तक योगयुक्त नहीं तब तक विघ्नों से युक्त हो।

15) जैसे सभी को सुनाते हो कि मुक्ति जीवनमुक्ति आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, उसे प्राप्त करो। ''अब नहीं तो कब नहीं।'' तो यह मुख्य स्लोगन पहले स्वयं अनुभव करो। भविष्य में तो यह वर्सा मिलना ही है लेकिन भविष्य के पहले अभी मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्टेज का अनुभव करो।

16) जीवन-बन्ध के साथ ही जीवन-मुक्त का अनुभव होता है, वहाँ तो जीवन-बन्ध की बात ही नहीं। वहाँ तो सिर्फ उसी प्रारब्ध में होंगे, मुक्तिधाम की मुक्ति का अनुभव जो अभी कर सकते हो वह वहाँ नहीं कर सकेंगे इसलिए संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो। वर्से के अधिकारी तो बने हो अब उसे जीवन में धारण कर पूरा लाभ उठाओ।

शिवबाबा याद है ? ***ओम् शान्ति*** 30-12-14 ***मधुबन***

(दादियों की आपस में ज्ञान की चिटचैट)

जब फॉरगिव करने की बात आती है तो किसको करें, कौन करे? यह मेरा क्वेश्चन है! अभी यह बात भी पूरी हो गई, कोई किसी ने भूल की नहीं है जो फॉरगिव करें क्योंकि ईश्वरीय आकर्षण ऐसी है तो अपने आप हरेक को रियलाइजेशन होती है, जो साधारण बातें हैं वो भी न हों, श्रेष्ठ बात हो यह भावना है। यह जो साइलेंस की आकर्षण है, तो यह न सिर्फ मेरे लिए फायदा है, सारे विश्व को वायब्रेशन देने वाली यह साइलेंस है। यह भी अच्छा है, फिर आवाज़ में आना वो भी अच्छा है, इसलिए मेरे लिए सब अच्छा है। ऐसे वायुमण्डल में हाज़िर होना न सिर्फ मेरा भाग्य है पर पदमापदम भाग्य है। साइलेंस में सूक्ष्म स्नेह और सच्चाई की शक्ति का वायुमण्डल में बल मिलता है।

इसमें धीरज, शान्ति, प्रेम काम करता है। अगर आत्मा के अन्दर में धीरज है तो कभी भी कोई फीलिंग नहीं होती है, न अपने लिये दु:ख करने की, न दु:ख देने की, न दु:ख लेने की, इससे फ्री हो जाते हैं। बाबा जो हर दिन सिखाता है, मुरली चलाता है वो कितनी सुखदाई है। देह सहित देह के सब सम्बन्ध भूल जाते हैं।

एक है दवा, दूसरी है दुआ। दुआ में ही दवा है इसलिए दवा की जरुरत नहीं है। हंसा बहन सुनती हो? पर दवा भी उसको टच होती है तो दुआयें मिलती हैं। इसको टच होता है कि अभी इसको कैसे भी करके खड़ा कर दूँ। सहज मिले जो दूध बराबर, मांग लिया सो पानी। बाबा से मांगते नहीं हैं, सहज मिल रहा है। हमारा आपस में एक दो से भी इतना रिगार्ड है, रिगार्ड मांगते नहीं है पर मैंने देखा है यह रिकॉर्ड रिगार्ड देने का, यह सदा ही अच्छा रहे यह शान है। किसके बच्चे हैं? वो नज़र आवे स्वरूप से।

मेरा ट्रांस में जाने का पार्ट नहीं था, मुझे इच्छा भी नहीं थी पर पार्ट नहीं था ना पर जो चलते चलते कोई मुझे मिल गया.. यह गीत बजता था तो उस खुशी नशे में उड़ जाती थी। आज दिन तक भी सिर्फ खुशी ही नहीं सूक्ष्म नशा भी कभी कम नहीं होता है।

तो मुझे कौन मिला है? मैं किसकी हूँ? और यह सब किसके हैं? क्या फीलिंग है? ऐसे साइलेंस में बैठ हर एक

अपने आपको पहचान बाबा को अपना बनाके सदा ही मुस्कराते रहो। यह बाबा ने एक गिफ्ट दी है, बाबा को जिसने पहचाना कौन है मेरा बाप, क्या करता है, यह समय है संगमयुग का जो सतयुग लाने वाला है, कलियुग को भगाने वाला है। ऐसे बाप के हम बच्चे हैं, हम क्या कर रहे हैं? जो बाप करता कराता है वही कर रहे हैं? मैं कुछ नहीं करती, करावनहार करा रहा है। सारी कमाल है करावनहार की, प्रभु की एक एक लीला को देख, फिर हरेक को देख, सभी जो सेवा कर रहे हैं, करावनहार करा रहा है तो यह स्मृति रहे तो कमाल है, करनकरावनहार स्वामी सगल घटा के अन्तर्यामी... भक्तिमार्ग में भी मैं यह कहती थी।

आप सबको देखते मुझे स्मृति स्वरूप बनना है, यह नेचुरल होवे। मैं कहती हूँ भले व्हाई व्हाई से छूट गये, वाह वाह यह मुख से कहने की जरुरत नहीं है क्योंकि हम सभी ड्रामा की नॉलेज को अच्छी तरह से जानते हैं, ज्ञान सागर बाबा ने जो ज्ञान दिया है। वह हमारे जीवन में हो। बाबा कहते हैं बच्ची ट्रस्टी और विदेही रह करके आप समान बनाती जाओ। मीठे बाबा ने पहले पहले यही महावाक्य उच्चारे थे जनक बच्ची झनक झनक पायल बाजे... तो बाबा ने जो महावाक्य उच्चारण किये हैं वो कभी भूले नहीं हैं, यह इतना भाग्य है। तो मेरे अलौकिक बर्थ डे की जो सभी को खुशी है, वह सबके दु:ख दूर करने वाली, सुख शान्ति में सम्पन्न बनाने वाली हो। उसमें जो भावना है, सच्चाई है, सैम्पुल भी हैं सिम्पल भी है, बड़ी बात नहीं है। सिर्फ कोई भी बात को थोड़ा सोच-सोच के बड़ा न बनायें। यह सबसे बड़ी भूल है। कई सोचते रहते हैं कि यह ऐसे नहीं होना चाहिए, यह भी ख्याल न आये। जो हुआ है अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा, जो होगा वो अच्छा। भगवान जैसे खुद न्यारा और सबका प्यारा है, ऐसे हमारी लाइफ भी नेचरल हो। शिवबाबा तो फिर भी निराकार है, साकार में तो हमारा ब्रह्मा बाबा रहा, तो ब्रह्माबाबा को सामने रखो, बाबा के एक एक फोटो के पोज़ न्यारे हैं।

भगवान को खुश करना माना क्या? सच्चाई, सफाई देखो, कोई भी स्थान हो यहाँ जितनी सफाई कहाँ भी नहीं होगी। यहाँ इतने लोग रहते हैं फिर भी देखो कितनी सफाई है! सभी को सफेद कपड़े पड़े हैं, वो तो कहेंगे सफेद कपड़े पहनेंगे तो कौन धुलाई करेगा! तो यह क्या प्रभु लीला है और सादगी भी बहुत। मैं ज्ञान में आई, बाबा के पास रही तो 12-13 साल में कराची में मैं समझती हूँ एक ही बार कपड़ा लिया था। मेरा कपड़ा फटता ही नहीं था, जल्दी फट जाए तो फेंक दूँ, ऐसा कभी नहीं किया। फट भी गया तो चत्ती लगाने में थोड़ा हाथ अच्छा साफ था, तो बाबा ने मेरा चत्ती लगाया हुआ कपड़ा देखा तो कहा मेरा कपड़ा भी जनक को दे दो तो मेरे कपड़ों को भी चत्ती लगावे। तो बाबा को सादगी अच्छी लगती थी। यज्ञ में कभी भी मैं नहीं समझती हूँ चप्पल भी खरीद किया होगा। दो पट्टी की चप्पल शुरू से ही पहनते आ रहे हैं। यह एक भगवान की दया दृष्टि मेरे ऊपर दुआओं के रूप में है। अच्छे कर्म करने वाले को अपने आप दुआयें सबकी मिलती है। बाबा इसमें खुश होता है।

अच्छे कर्म किसको कहा जाता है, यह भी अच्छी तरह से समझना है। तो एक बाबा को याद करो, दूसरा जो राइट काम है वो एक्यूरेट करो। मिस नहीं करो। फिर अपने में विश्वास रखो, मेरे से इतना पुरुषार्थ नहीं होता है, ऐसा कभी नहीं सोचना। सदैव समझो मेरे से बाबा करा रहा है। करावनहार मेरा स्वामी है। करता भी वही है, कराता भी वही है, वो मेरा स्वामी है। माता, पिता, टीचर, सतगुरू के साथ जब स्वामी कहते हैं तो समझते हो फर्क है!

तो एंजिल बनना हो तो क्या करो? देवता बनने में मेहनत है। कोई अवगुण न हो। सर्व गुण सम्पन्न बनें तो कहेंगे मैं देवता हूँ। एंजिल बनने के लिए सदा यही स्मृति रहे कि करावनहार करा रहा है, बहुत हल्के होकर कर्म करता चले, धरती पर पांव न हो। ऐसा लायक होवे। तो करने लायक बनाने वाला भी वही है।

गुल्जार दादी:- यह बाप और बच्चों का मिलन कितना सुहाना है! अभी भी सभी बच्चे बाप से मिलन मना रहे हैं, कितनी खुशी की बात है। और खुशी ऐसी खुराक है जो जितना खाते जाओ उतना ही बढ़ती जायेगी। और खुशी हमारे जीवन का वरदान है, जब से बाबा के बने हैं तब से हरेक को बाबा ने खुशी की खुराक खिला करके ऐसा बना दिया जो बस, बाबा दिल में समा गया और हम बाबा में समा गये। बाबा कहते हैं वाह मेरे बच्चे! और हम कहते हैं वाह मेरा बाबा! मेरा बाबा जब हम कहते हैं तो दिल कहती है वाह बाबा वाह! और बाबा कहता है वाह बच्चे वाह! तो बाबा कहे वाह मेरे बच्चे वाह! यह लक हम थोड़े बच्चों को ही मिलता है और कितनी खुशी होती है, बाप और बच्चों से मिलके बाबा भी देखो वाह वाह करता रहता है और हम तो बाबा के प्यार में समाये हुए हैं ही। तो जैसे बाबा आते हैं तो सबकी बुद्धि में और कुछ भी नहीं रहता बस मेरा बाबा। क्या देता? क्या बनाता? वो तो दिल में बार-बार आता रहता है इसलिए निकलता वाह बाबा वाह! क्या थे और क्या बना दिया और कितना मीठा सैर कराता है। तो सभी अभी भी उसी बाप के मिलन मौज में बैठे हैं, यह सभा देख

करके बहुत खुशी हो रही है। सभी के दिल में एक बाबा है और कुछ भी नहीं है और बार-बार निकलता वाह बाबा वाह! तो जितना बाबा दिल में समाया हुआ है, उतना ही बाबा कहता है मेरे दिल में भी कौन? मेरा एक एक बच्चा मेरे दिल में समाया हुआ है। और खुशी कितनी होती है वाह बाबा वाह कहके खुशी कितनी होती है! तो सारा दिन यह खुशी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार हो जाता है। अभी भी सभी की शक्लें क्या बोल रही है? मेरा बाबा। और बाबा सामने आते ही चेंज हो जाते हैं, सभी के फेस बदल जाते हैं। बस, मेरा बाबा कहा और फेस बदला और कितना मजा आता है। जिसको सभी ढूँढ रहे हैं वो मेरा बाबा है। दुनिया ढूँढ रही है, हमने पा लिया, मिल गया कितनी खुशी की बात है।

दादी जानकी:- जो भी बात होती है मैं गुल्जार दादी को बताती हूँ, दादी जब तक रेसपांस दे तब तक बाबा जानें बाबा का काम जानें। मुझे क्या करने का है, मुझे कुछ नहीं करना है। बाकी आप सभी की दुआयें हैं, जो दर्द आता है चला जाता है। ऐसे दुआओं का पात्र बनना यह भी भाग्य है। दुआयें मांगना नहीं है बल्कि दुआओं का पात्र बनना है। ऐसा पात्र बनें जो अपने आप सबके दिलों से दुआयें निकलें। दादी अभी बताओ हमें क्या करना है?

गुल्जार दादी:- बाबा चाहता है मेरा एक एक बच्चा मेरे समान बन जाये। जैसे बाबा को हम सब कितने प्यार से देखते हैं और जैसे बाबा में समा जाते हैं। तो ऐसे ही हम भी बनें जो कोई भी हमको देखे तो बाबा के प्यार में समा जाये। सबके दिल में बाबा बाबा बाबा बाबा, दिलाराम बाबा है। और हम दिल में समाने वाले हैं।

दादी जानकी:- मैंने कर्म पर बड़ा ध्यान रखा है फिर भी क्या कुछ ऐसे कर्म रहे हुए हैं, जो शरीर कभी कभी थोड़ा साथ नहीं देता है? श्रेष्ठ करने नहीं देता है, कुछ कर्म रहा हुआ है या मेरे अन्दर से भावना है, मुझे कर्मातीत जरुर बनना है, उसके लिए कुछ और ध्यान रखना है जो कर्मातीत बनें पर थोड़ा भी कोई ऐसा कर्म है क्या! जो शरीर के कारण थोड़ा सहन करना पड़ता है। बाबा मदद करता है यह तो मैं जानती हूँ परन्तु फिर भी यह न होवे, जब तक आत्मा शरीर में है एवरहेल्दी, वेल्दी, हैपी रहने के लिए क्या करें? जो कर रही हूँ उसी से कर्मातीत बन जायेंगी या कर्मातीत बन रही हूँ या बनेगी? साक्षी हो बताओ आप सब भी। हंसा बहुत सेवा करती है हमारी, परन्तु यह मेरे शरीर की सम्भाल करना, मेरा शरीर नहीं है पर इस शरीर को सम्भालना इसके पुण्य कर्म का खाता जमा होगा। ऐसे है ना, बताओ।

दादी गुल्जार जी ने कहा जो आप कर रहे हैं वही ठीक है, इसी से कर्मातीत बन रहे हैं, बनते जा रहे हैं। कर्मातीत तो बन रहे हैं और बनके ही जायेंगे। ऐसे नहीं जायेंगी।

दादी जानकी:- क्योंकि यह मेरी भावना है अन्त मते जैसे बाबा की थी ऐसी स्थिति हमारी रहे। जैसे मैं बाबा की बनी हूँ, बाबा ने मेरी भावना पूरी की है, मेरी अन्त मते स्थिति ऐसी हो जैसे बाप वैसे बच्चा, कोई फर्क न हो। तो यह सब आप सबका प्यार, सच्चाई का सदा मुझे साथ मिला है। अन्त मते ऐसे सभा के बीच में बैठे-बैठे ओम् शान्ति... हो जाये तो और क्या चाहिए! क्योंकि अभी सेवा मुख से नहीं करनी है। मैंने कभी भी कर्मणा सेवा नहीं कहा होगा, यज्ञ सेवा क्योंकि सेवा में सबके साथ सम्बन्ध सम्पर्क होता है, अकेले तो नहीं करते हैं। अभी मैं साक्षी होकर देख रही हूँ जो यज्ञ सेवा है, सारे यज्ञ की सेवा इतने सब कर रहे हैं। परन्तु देखा है वाचा भी जो पहले कर सकती थी अब इतनी नहीं कर सकती हूँ परन्तु मुझे यह शुभ भावना थी, मुझे बोलना नहीं है जो बाबा ने सिखाया है वो जीवन में होवे, तो कोई अच्छा जल्दी जल्दी काम हो सकता है। तो जल्दी से हो जाये तो अच्छा है ना क्योंकि विनाश सामने खड़ा है। विनाशकाले सबकी प्रीत बुद्धि होवे यह मेरी भावना है, तो भावना काम कर रही है बाकी और कुछ नहीं करती हुँ। किसी का भी अवगुण दिखाई नहीं देता, यह बाबा ने गिफ्ट दी है। न देखो, न सुनो, न सुनाओ.. देखना सुनना फिर वर्णन करना यह एक बड़ी भूल है। ऐसी भूलें नहीं करनी है, मैं सभी भाई बहनों को कहती हूँ - किसी के भी अवगुणों को न देखो, यह अवगुण देखना बड़ा अवगुण है। अभी मैं देखती हूँ हरेक में अपनी अपनी विशेषतायें हैं। मेरी दृष्टि वृत्ति ऐसी हो उसकी विशेषता से वो विशेष आत्मा बन जाये। जो दादी का पार्ट है मेरा नहीं हो सकता है। इनका विशेष पार्ट है, यह विशेष आत्मा है। तो मुख से मुझे कुछ नहीं बोलना है पर सब विशेष आत्मा हैं, यह दृष्टि वृत्ति स्मृति में सदा रहे।

अपने को निमित्त ऐसे बनाओ जो सभी का भला हो जाये, तेरे भाने सर्व का भला यह है चढ़ती कला, रूकती कला नहीं। कोई बात रोक नहीं सकती, सदा ही चढ़ती कला हो। भक्तिमार्ग के शब्द भी कई बार काम में आते हैं ''नानक नाम चढ़ती कला तेरे बहाने सर्व का भला'' मैंने कुछ नहीं किया, उसने किया, निमित्त कराके मेरे को चढ़ती कला में ले गया। ओके, ओमशान्ति।

गुल्जार दादी: बाबा यही हम बच्चों से चाहता है कि सभी बच्चे खुश रहें और खुशी दें, यह खुशी का ख़ज़ाना ऐसा है जो सब खुश रहें। वो दुनिया ही बहुत प्यारी लगती है। तो बाबा

कहते खुश रहो और खुशी बाँटो, यही हम सबका लक्ष्य होना चाहिए क्योंकि हम संगठन में रहते हैं तो एक दो से कनेक्शन में तो आना ही है लेकिन खुश होके रहें और दूसरे की खुशी को देख करके खुश होवें, यही हमारा लक्ष्य है और इसी लक्ष्य से बाबा जो चाहता है बच्चे सम्पूर्ण हो जायें वो हो ही जायेंगे। लक्ष्य पक्का रखें। कोई भी बात होवे, उसको नहीं देखें लेकिन अपने लक्ष्य पर सदा कायम रहें और एक दो का गुण देखें। कोई ऐसा नहीं होगा जिसमें एक भी गुण नहीं हो, गुण तो हरेक में बहुत ही हैं। कोई न कोई गुण सभी में होता है उसका गुण ही देखें, अवगुण के तरफ हमारी दृष्टि नहीं जाये। अगर हम उनके अवगुण मिटा सकें इतनी हिम्मत है हमारे में तो उसकी सेवा करें, बाकी तो हम सबमें गुण देखें और गुण की महिमा से आगे बढ़ते जायें, बढ़ाते जायें। ओम् शान्ति।

जयन्ती बहन:- मैं सोच रही थी कि क्या विशेषता है जिसने तीनों ही दादियों को खींच करके इतना समय बिठा लिया (तीनों दादियाँ करीब पौने दो घण्टा बैठे होंगे) तो मुझे लगता है कि यह वह समर्पण आत्मायें हैं, जिन्होंने अपना सब कुछ बाबा के सामने समर्पण किया है। और इन्हों के मन में एक बाबा और बाबा की सेवा ही है, तो उससे जो वायब्रेशन्स बनते हैं वह ऑटोमेटिकली बहुत बहुत श्रेष्ठ होते और फिर दादियाँ भी उसको देख करके खींच करके आयी हैं। तो यह संगठन का योग भी चल रहा है, वो भी बहुत शक्तिशाली और इतना प्यार से दादियों का डायलॉग भी सुना, वो भी मैं सोचती हूँ कि हम बड़े भाग्यवान हैं यह दिन हमें याद रहेंगे कि किस तरह से हमने दादियों का डायलॉग सुना।

रतनमोहिनी दादी:- सर्व को देखते सदा हमारी दिलखुश रहे और सर्व को खुशियाँ बाँटते रहें। यह अपना ईश्वरीय परिवार देख-देख मन हर्षाये, सदा मुस्कराते रहें और सदा सर्व को यही सौगात देते रहें। कभी अपना चेहरा मुस्कराने के सिवाए न रहे। अच्छा - ओम् शान्ति।

"अपने भाग्य की स्मृति में रह सदा खुशी में रहो, कभी दिलशिकस्त नहीं बनो"

(डबल विदेशियों के साथ गुल्जार दादी जी की रूहरिहान)

सभी ने बाबा के साथ हैपी न्यू इयर मनाया? तो जो बाबा से मनाया माना बाबा से हमने दिल का संकल्प रखा। क्या रखा? कि यह सारा साल हैपी रहेंगे। न्यू इयर कहा डे नहीं कहा। तो वायदा क्या हुआ? सारा साल हम हैपी रहेंगे। पक्का? ऐसे तो नहीं कि 2-4 मास हैपी रहेंगे, बाकी देखेंगे। यह पूरा साल हैपी रहेंगे। ठीक है? अगर कोई बात आ जाये तो क्या करेंगे? क्योंकि माया तो सुन रही है कि अब यह वायदा कर रहे हैं कि पूरा ही साल हम खुश रहेंगे। तो समझो कोई भी बात आ जाये तो फिर क्या करेंगे? क्योंकि पेपर के बिना तो आगे बढ़ना नहीं है। क्लास चेन्ज होता है तो भी पेपर होता है। तो पेपर होगा लेकिन आप क्या करेंगे? पास हो जायेंगे, सभी पास होंगे या पास विथ ऑनर होंगे? डबल फॉरेनर पास विथ ऑनर! अच्छा, मुबारक हो।

कुछ भी हो जाए लेकिन हमारे खुशी में फर्क नहीं पड़े। बाबा ने कहा भी है - अपनी चेकिंग आप करो। और उसमें हर मास अपनी परसन्टेज लिखना। हमें यह अनुभव होता है कि जितना होना चाहिए, जितना मैंने सोचा था उतना नहीं है, फिर दिलशिकस्त हो जाते, खुशी थोड़ी कम हो जाती, तो क्या करेंगे? फिर बाबा बाबा, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा ऐसे करेंगे? इसलिये दिलशिकस्त कभी नहीं होना चाहिए। क्योंकि चलो थोड़ा बहुत कभी पेपर आ जाता है, तो पेपर फाइनल तो नहीं है ना। मार्जिन तो है हमको फिर भी उड़ने का। तो हमको अपने भाग्य को याद करना चाहिए। एक तो बाबा ने हमें चुना है, बाबा की नज़र हम पर पड़ी और हम बाबा के पास आ गये। तो जिसके ऊपर भगवान की नज़र पड़ी, तो हमारा पार्ट तो बहुत अच्छा है, तभी तो बाबा की नज़र खास हमारे ऊपर ही पड़ी। तो बाबा की नज़र तो रांग नहीं हो सकती है ना, हमारी हो सकती है क्योंकि हम पुरुषार्थी हैं लेकिन बाबा तो सम्पूर्ण है ना।

दूसरा - यह सोचें कि हमारा ऐसा कितने कल्प पार्ट चला है -हम अनगिनत बार बाबा के बने हैं और हर कल्प हम ही बनते हैं। दूसरे तो कोई नहीं बनते हैं। तो जरुर हमारा हर कल्प जो पार्ट है, वो हमारा भाग्य है। हमारा भाग्य कम होता तो बाबा अपनी नज़र इधर से इधर कर लेता। लेकिन बाबा की नज़र हमारे ऊपर है। और जब थोड़ा भी दिलशिकस्त की लहर आवे तो बहुत होशियार वाले को नहीं देखो उसको देखने से और ही दिलशिकस्त हो जायेंगे। लेकिन यह देखो कि हमारा अपना भाग्य क्या है? उस समय ऊपर वालों को देखेंगे

तो अपने को बहुत नीचा समझेंगे और ही नीचे-नीचे हो जायेंगे। जब माया ऐसे फोर्स से व्यर्थ संकल्प रूप में आवे, तो आप उस समय अन्तर्मुखी हो जाओ। अन्तर्मुखी माना इस शरीर के भान से अन्दर चले जाओ, आत्मा रूप में तो आप आउट हो गये माना शरीर भान से आउट हो गये। जब शरीर के भान में ही नहीं होंगे तो माया आके क्या करेंगी, लौटके चली जायेगी। तो अन्तर्मुखी उस समय विशेष बनो, बाकी दिलशिकस्त नहीं बनो। एक बार अगर दिलशिकस्त हो गये तो बार-बार इसी रूप में आती रहेगी, खुशी गुम हो जाती है तो उस समय ऐसे लगते हैं जैसे टूमच गम्भीर, वैसे गम्भीर होना अच्छा है लेकिन टू मच, एक्स्ट्रा गम्भीर ठीक नहीं है फिर भोजन खाना भी अच्छा नहीं लगेगा, किसी से बात नहीं करेंगे, सेवा का उमंग नहीं आयेगा, बस, अपने ही सोच में पड़े रहेंगे तो यह कोई लाइफ है क्या? इसीलिए दिलशिकस्त कभी नहीं होना। अपने भाग्य को सदा याद रखो क्योंकि अरे भगवान ने हमें पसन्द किया है तो जरूर कुछ तो हमारे में देखा होगा ना। तब तो भगवान ने अपना बनाया, उसे सोचो, अपनी कमियों का नहीं सोचो। कमियों के बारे में सोचते रहेंगे तो माया और ही ज्यादा संकल्प चलायेगी इसलिये अपनी खुशी कभी नहीं गँवाना। कोई-न-कोई खुशी की बात जो आपको अच्छी लगती हो वो याद करो।

जैसे हम कितने बार न्यू वर्ल्ड में राज्य करके आये होंगे? यह सोचो। आत्मा में जो संस्कार भरे हुए हैं कैसेट के मुआफिक... तो उसको इमर्ज करो क्योंकि हम ही तो सतयुग में थे। तो आत्मा जब डबल लाइट होगी तो आत्मा जहाँ चाहे वहाँ एक सेकण्ड में पहुँच जायेगी। यहाँ बहुत बातें हैं तो सतयुग में चले जाओ। तो बुद्धि को वहाँ मेरे बाबा में लगा दो, तो बस सेकण्ड में पहुँच जायेंगे। इसमें एक हिम्मत का पंख, दूसरा उमंग-उत्साह का पंख चाहिए तो आप यूँ उड़ जायेंगे। पंख नीचे ऊपर हो और मेरा बाबा कहो तो उड़ेंगे नहीं क्योंकि मेरा बाबा है ही नहीं। जिस समय व्यर्थ संकल्प चल रहे हैं उस समय मेरा बाबा कहाँ रहता है? तो पंख हिलेंगे, मन रूपी विमान उड़ेगा इसलिये दिल से कोई कहे कि मेरा बाबा तो उड़ते रहेंगे। प्यार की रस्सी से बाबा को बांधके रख दो। मेरा शब्द कहने का अर्थ ही है अधिकार। तो बाबा मेरा, हमने कह दिया तो हमारा बाबा के ऊपर पूरा अधिकार हो गया।

बाबा की जो भी श्रीमत है उसमें अगर हाँ जी, हाँ जी करते हैं तो हज़ूर उसके सामने हाज़िर होता है। कोई श्रीमत पर हमने अगर हाँ जी नहीं किया है तो हजूर हाजिर नहीं होगा। वो चेक करो और चेन्ज करो। बाबा की श्रीमत है व्यर्थ संकल्प नहीं करो, तो हमें उस समय किसी भी रीति से भले गीत सुनो, उसके अर्थ में चले जाओ और अपने थॉट को चेन्ज करो। जहाँ भी रूचि हो वहाँ चले जाओ। फिर कभी सूक्ष्मवतन में चले जाओ, सिर्फ व्यर्थ संकल्प की जो आदत पड़ी हुई है उसको कट करो। मानो शिवबाबा की याद नहीं आती है तो ज्ञान का मनन करो, रूहरिहान करो, मधुबन कैसे है? ज्ञानसरोवर और शान्तिवन कैसे है? वहाँ आने-जाने की स्टोरी को ही याद कर लो, तो भी व्यर्थ संकल्प का लिंक टूट जायेगा क्योंकि जब तक व्यर्थ संकल्प पूरे खत्म नहीं होंगे तब तक योग की पॉवरफुल स्टेज नहीं बन सकेगी। तो इसी रीति से अपने को आगे बढ़ाने की विधि आप समझ लो तो आपकी खुशी कायम रहेगी।

बात के कारण को समझ करके, खुद ही खुद का जज बन करके उस बात का निवारण करके निर्णय कर लो कि अब आगे के लिये ऐसे नहीं होगा। बाकी जो हो चुका उसे वर्णन नहीं करो। वर्णन करने से वाह-वाह की जगह व्हाई-व्हाई हो जाता है तो फिर वाई हो जाता है। तो वाह वाह करना है, इसके लिये बाबा कहते हैं जो हुआ सो बिन्दी लगाओ। दूसरा सारे दिन में मन को बिजी रखो क्योंकि योग भी हमारा किससे है? मन ही से तो योग लगाना है और टेन्शन किसमें आता है? मन में। यानि मूल जो आधार है वो हमारा मन है। तो मन को बिजी रखने से आप पुरुषार्थ की मेहनत करने से छूट जायेंगे। तो मन को याद या सेवा में बिजी रखो। संकल्प शक्ति द्वारा मन्सा सेवा करो। मन्सा से नहीं कर सकते हो तो वाणी से करो। वाणी से भी नहीं सेवा कर सकते हो तो बाबा कहते हैं आप अपने (शुभ भावना, शुभ कामना की) वृत्ति से भी सेवा कर सकते हो। यह भी नहीं कर सकते हो तो हम जहाँ रहते हैं वहाँ ऐसा पॉवरफुल वायुमण्डल बनाओ जो और कहीं भी आपकी वृत्ति जाये नहीं। तो इसी रीति से अपने मन को सेवा में बिजी रखो या याद के कोई-न-कोई स्टेज में बिजी रखो तो मन चंचलता नहीं करेगी। इसके लिये अपने मन का टाइम-टेबुल बनाओ। इससे क्या होगा कि पुरुषार्थ में जो मेहनत फील करते हो वो सहज हो जायेगी।

संगमयुग वेस्ट करने का नहीं है, कमाई जमा करने का युग है इसलिये संगमयुग में हर सेकण्ड महान है। हर संकल्प बहुत महान है इसीलिए अपने संकल्प और समय को व्यर्थ जाने से बचाओ और समर्थ में जमा करो नहीं तो वेस्ट चला जायेगा। तो जो भी खज़ाने हमारे हैं संकल्प, समय, ज्ञान, शक्तियाँ, गुण आदि... यह सब हमारे खज़ाने है, उन्हें बचाओ और जमा करो। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

"सर्व बन्धनों से मुक्त सच्चे-सच्चे तपस्वी बनो"

हम सभी इस समय तपस्वीमूर्त होकर बैठे हैं। चाहे तपस्वी कहें, चाहे राजयोगी कहें। जिस घड़ी से बाबा ने आत्मा और परमात्मा बाप की पहचान दी उस घड़ी से ही प्रैक्टिकल में अपनी तपस्या चालू है। यह सब्जेक्ट जितनी सहज है, उतनी ही मेहनत की है। जो ब्रह्मा बाबा भी कहते थे कि मैं भी इसमें मेहनत करता हूँ। हमारे तपस्या की अन्तिम रिजल्ट है कर्मातीत बनना। अब कर्मातीत बनने के लिये तपस्या की आवश्यकता है। तपस्या अथवा साधना के लिए बाबा भिन्न-भिन्न साधन बताते हैं।

उदाहरण के लिये – तपस्वी उसको कहेंगे जो 1- सर्व सम्बन्धों के बन्धन से मुक्त हो। 2- जो अपने सर्व संस्कारों के बन्धन से ऊंचा रहे, मुक्त रहे। 3- जो सर्व कर्मेन्द्रियों को अपने अधीन रखे। अगर हम तपस्वी हैं लेकिन अभी तक कोई पुरानी आदत है, पुराना स्वभाव है, पुराना संस्कार है, उसके अधीन हैं, वश हैं तो इसको कहा जाता है विघ्न। कहते हैं ऋषि-मुनि तपस्या करते थे तो असुर विघ्न डालते थे। अपने ही स्वभाव-संस्कार तपस्वी के लिये बहुत बड़े विघ्न हैं। आत्मा है राजा, बैठी है भृकुटि के सिंहासन पर। राजा को चलते-चलते ये कर्मेन्द्रियाँ–कभी आंख धोखा दे देगी, कभी दो इंच की जीभ धोखा दे देगी, कभी कोई इन्द्रिय, कभी कोई इन्द्रिय। 4- तपस्या माना अपने सूक्ष्म संस्कारों पर भी पूरा कन्ट्रोल हो। तपस्या की रिजल्ट है जीवनमुक्ति।

जब हम ऐसे तपस्वी बनें तब इन सभी बन्धनों से मुक्त हो बाबा के सर्व सम्बन्धों के अलौकिक अतीन्द्रिय सुख के मौज में रह सकते हैं, इसे ही जीवनमुक्ति कहते हैं। कई बार बाबा कहते हैं यह अतीन्द्रिय सुख है अन्तिम। यदि अन्त में यह अनुभव हुआ तो क्या वर्णन करेंगे! हम तपस्वियों का एक-एक सेकण्ड अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में बीते, एक बाबा के लव में लीन रहें, तब हमारे अतीन्द्रिय सुख का गायन हो। लेकिन यह तभी हो सकता है जब हम इस स्थिति पर पहुँचे, जहाँ गीता भी समाप्त होती अर्थात् स्मृतिर्लब्धा नष्टोमोहा। तपस्या सच्ची तब कहेंगे जब हम ऐसे स्मृतिर्लब्धा और नष्टोमोहा बनें। बाबा ने सहज तपस्या की बहुत अच्छी विधि सुनाई है, हमारा अनुभव भी कहता कि हरेक इस विधि को सहज धारण करो – वह विधि है एक तो बाबा को सदैव अपना कम्पैनियन देखो, दूसरा बाबा के साथ सदा कम्बाइन्ड रहो। हमारे तपस्या का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हम सदैव बाबा के साथ कम्बाइन्ड रूप में रहें तो दूसरी कोई भी स्मृति नहीं रहेगी, कोई व्यक्ति, वैभव, वस्तु आकर्षण नहीं करेगी। जब बाबा कम्बाइन्ड है तो उनके आगे न कोई दूसरी याद है, न संकल्प है, न कहीं बुद्धि जायेगी। कहीं पर भी बुद्धि क्यों जाती है? क्योंकि बाबा को कम्पैनियन नहीं बनाते। फिर बुद्धि किसी न किसी अनेक प्रकार के पदार्थों में, व्यक्तियों में जाती है। कम्पैनियन बाबा है, कम्बाइन्ड बाबा है। बाबा कई बार पूछते कि क्या ऐसी प्रैक्टिस है जो एक सेकण्ड में सब समेट कर आवाज़ से परे हो जाओ, जिसको अशरीरी स्थिति कहते हैं? इसका अभ्यास सोते, उठते, खाते-पीते, चलते-फिरते, हर घण्टे, हर मिनट करो। जितना यह अभ्यास करेंगे उतना ही हम कर्मातीत स्थिति के नजदीक जायेंगे और उस सुख को अनुभव करेंगे। बाबा समय की सूचना देते रहते है। बाबा केवल यह नहीं कहते कि तुम्हें कर्मातीत बनना है लेकिन यह भी कहते कि जब तुम सम्पन्न बनेंगे तब विनाश होगा। सारी सृष्टि को परिवर्तन करने के लिये, रुहानियत की शक्ति उन्हों को मिले–यह जिम्मेदारी बाबा ने हम सब तपस्वी बच्चों को दे रखी है। सारी सृष्टि के परिवर्तन की जिम्मेवारी हमारे पर है। जब यह स्मृति रहती है तो हम कहाँ भी टाइम न गँवा कर फास्ट पुरुषार्थ में लग जाते हैं।

कई बार बाबा मुरली में कहते हैं कि बच्चे कोई बात का फिक्र नहीं करो लेकिन एक बात का फिक्र जरूर रखना है कि हमें सम्पन्न बनना है। जैसे लौकिक में कोई फिक्र होती तो रात को नींद भी नहीं आती, वह फिक्र बार-बार सामने आती। तो यह भी फिक्र हो कि मुझे शरीर छोड़ने से पहले ऐसा सम्पन्न बनना है जो अन्त में जब मैं शरीर छोड़ूं तो एकदम सन्नाटा हो जाये। इसके लिये हमें रोज़ मेहनत चाहिये।

हम कितने सौभाग्यवान हैं, भगवान कहे बच्चे तुम मेरे दिल के तख्त के मालिक हो, तो हमारा तख्त कितना महान है! अगर हम उसी दिल तख्त पर लवलीन रहें तो भी किसी में बुद्धि नहीं जायेगी, न जाने की मार्जिन है। कई बार सेवाओं के उमंग होते हैं। सेवा तो जरूर करो। सेवा तो हमारे ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य है। परन्तु सेवा में किसी को भी तीर तब लगेगा जब हमारे में रुहानियत होगी। इसके लिए बाबा हमें हर पल, हर कदम तपस्या के लिये इशारा करता है। तो सभी भाई बहिनें इस वर्ष विशेष तपस्या करो। मौन में रहने का अभ्यास करो। मौन भट्ठी अथवा याद की यात्रा निरन्तर चलती रहे तब स्वयं के कड़े संस्कार, स्वभाव परिवर्तन होंगे। जब हर एक ऐसा स्व को परिवर्तन करेगा तब यह संसार परिवर्तन होगा। अच्छा - ओम् शान्ति।